# विक्रम संवाद

पाक्षिक आलेख सेवा/नि:शुल्क वितरण के लिए



सम्पादक

महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ

बिड़ला भवन, देवास रोड, उज्जैन-456010

फोन : 0734-2521499, 0755-2660407

**Email :** mvspujjain@gmail.com
vikramadityashodhpeeth@gmail.com

**Web :** www.mvspujjain.com


## इस अंक में


**पृष्ठ क्र. 1-2**

**विक्रमोत्सव-2024: भारतीय अस्मिता का उत्सव**
राजेश्वर त्रिवेदी

**पृष्ठ क्र. 3-4**

**प्राचीन देवालय और रंगमंच परंपरा**
जगदीश प्रसाद शर्मा

**पृष्ठ क्र. 5-18**

**विक्रमोत्सव कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी**

**पृष्ठ क्र. 8**

**रघुवंश गाथा रघुकुल की**
मिथिलेश यादव


# विक्रमोत्सव-2024: भारतीय अस्मिता का उत्सव

राजेश्वर त्रिवेदी

उज्जैन के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य भारतवर्ष में नवजागरण और उत्कर्ष की एक महत्वपूर्ण धुरी रहे हैं। सतत् लोकप्रिय है। भारतीय अस्मिता के उज्जवल प्रतीक, शक विजेता, सम्वत् प्रवर्तक, वीर दानी और न्यायप्रिय रहे हैं। भारत के इतिहास में रामराज्य के बाद विक्रमादित्य के सुशासन का ही स्मरण किया जाता रहा है। उनके द्वारा चलाये गये विक्रम नामक सम्वत्सर शताब्दियों से सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त एवं मान्य है। विक्रमादित्य की कथाएँ भारत के कोने-कोने के जन-मानस में कथा-कहानियों के माध्यम से प्रसिद्ध हैं। विक्रमादित्य की कथाओं और सम्वत्सर की अधिक प्रसिद्धि है।

विक्रमादित्यकालीन ज्ञान परंपरा और उसकी विशेषताओं के कारण भारत वर्ष के विकास में एकरूपता, दिखाई देती थी। सम्राट विक्रमादित्य के काल की एक संस्कृति थी जिसके मूल में भौगोलिक राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक साहित्यिक व कला संबंधी एकता का सूत्र गूंथा हुआ था। विक्रमादित्य भारतवर्ष के सांस्कृतिक विकास, शौर्य और वैभव के वे प्रतीक थे। वे अपने औदार्य, विद्वत्ता, साहित्य-सेवा, अलौकिक प्रतिभा एवं दिग्विजय के कारण सर्वश्रुत थे। वे प्रत्येक बात में इतने अद्वितीय थे कि उनकी उपमा संभवतः किसी से भी नहीं दी जा सकती।

उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य ने ही 57 ईसा पूर्व अपने नाम से विक्रम सम्वत् चलाया था। उन्होंने शकों पर विजय की याद में यह सम्वत् चलाया था। उनके ही नाम से वर्तमान में भारत में विक्रम सम्वत् प्रचलित है। कहा जाता है कि मालवा में विक्रमादित्य के भाई भर्तृहरि का शासन था। भर्तृहरि के शासन काल में शकों का आक्रमण बढ़ गया था। भर्तृहरि ने वैराग्य धारण कर जब राज्य त्याग दिया तो विक्रम सेना ने शासन संभाला और उन्होंने ईसा पूर्व 57-58 में सबसे पहले शकों को अपने शासन क्षेत्र से बहार खदेड़ दिया। इसी की याद में उन्होंने विक्रम सम्वत् की शुरुआत कर अपने राज्य के विस्तार का आरंभ किया। इस सम्वत् के प्रवर्तन की पुष्टि ज्योतिर्विदाभरण ग्रंथ से होती है, जो कि 3068 कलि अर्थात 34 ईसा पूर्व में लिखा गया था। इसके अनुसार विक्रमादित्य ने 3044 कलि अर्थात 57 ईसा पूर्व विक्रम सम्वत् चलाया। सम्राट विक्रमादित्य की चर्तुदिक ख्याति थी। भारतवर्ष में ही नहीं अपितु दुनिया के अनेक देशों में विक्रमादित्य के बारे में सुनने और जानने के लिए अथक सामग्री मिल जाती है। सम्राट विक्रमादित्य का ही पौरुष था कि उन्होंने ना केवल शकों को पराजित किया बल्कि भारतीय संस्कृति की रक्षा की। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का श्रेय भी उन्हें जाता है। सुनियोजित ढंग से

विक्रमादित्य को उज्जैन की सीमा तक रखा गया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विक्रमादित्य की ख्याति समूचे संसार में रही है। विक्रमादित्य के शौर्य, साहस, न्यायप्रियता और विद्वता का कोई सानी नहीं है। सम्राट विक्रमादित्य अपने राज्य की जनता के कष्टों और उनके हालचाल जानने के लिए छद्मवेष धारण कर नगर भ्रमण करते थे।

सम्राट विक्रमादित्य अपने राज्य में न्याय व्यवस्था कायम रखने के लिए हर संभव कार्य करते थे। इतिहास में वे सबसे लोकप्रिय और न्यायप्रीय राजाओं में से एक माने गए हैं। सम्राट विक्रमादित्य का सविस्तार वर्णन भविष्यपुराण और स्कंदपुराण में मिलता है। कहते हैं कि उन्होंने तिब्बत, चीन, फारस, तुर्क और अरब के कई क्षेत्रों पर शासन किया था। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में सिम्हल (श्रीलंका) तक उनका परचम लहराता था। सम्राट विक्रमादित्य की अरब विजय का वर्णन अरबी कवि जरहाम किनतोई ने अपनी पुस्तक 'शायर उर ओकुल' में किया है। यही कारण है कि उन्हें चक्रवर्ती सम्राट महान् विक्रमादित्य कहा जाता है। भारत उत्कर्ष और नवजागरण पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2024 भारतीय समाज को अपने ही इतिहास से परिचित करवाने का प्रयास है।

विक्रमोत्सव एक आयोजन मात्र नहीं है बल्कि यह उस भारतीय में परम्परा का द्योतक है जहाँ हम अपने पूर्वजों का पुण्य स्मरण करते हैं और उनके बताये रास्ते पर चलकर भारतवर्ष को नित नयी ऊँचाई तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास करते हैं। महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ की स्थापना के बाद वर्ष 2009 से निरंतर विक्रमोत्सव का आयोजन किया जाता रहा है। महाशिवरात्रि से वर्ष प्रतिपदा की अवधि में होने वाले विक्रमोत्सव में ख्यात कलाकार हेमा मालिनी द्वारा जिनमें "शिवदुर्गा नृत्य नाटिका" लोकप्रिय संगीतकार अमित त्रिवेदी द्वारा "नमामि महादेव" तथा प्रसिद्ध अभिनेता आशुतोष राणा द्वारा 'हमारे राम' की प्रस्तुति तथा लोकप्रिय गायक जुबिन नौटियाल की सांगितिक प्रस्तुति शामिल है।

चालीस दिनों तक चलने वाला यह आयोजन अपने आप में देश का सबसे बड़ा आयोजन माना जा रहा है। उज्जैन शहर के चार अलग–अलग स्थानों पर प्रतिदिन भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोक नृत्यों तथा लोक संगीत के कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ होगी। इस समारोह का समापन गुड़ी पड़वा के अवसर पर उज्जैन में मनाए जाने वाले शिव ज्योति अर्पणम कार्यक्रम में चौबीस लाख से अधिक दीपक प्रज्वलित करने का रिकॉर्ड बनाने से होगा। इसके साथ ही अखिल भारतीय वेद सम्मेलन, वेद अंताक्षरी, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन और सूर्योपासना कार्यक्रम महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के माध्यम से होंगे। इस वर्ष विक्रमोत्सव में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी, विक्रम पंचांग 2081, आर्ष भारत समेत अन्य प्रकाशनों का लोकार्पण शुभारंभ अवसर पर होगा। शासन के विभिन्न विभागों सहित मध्यप्रदेश जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, अश्विनी शोध संस्थान, महर्षि पाणिनि संस्कृत वैदिक विश्वविद्यालय, महर्षि सांदिपनी वेद प्रतिष्ठान, संस्कृत बोर्ड, आचार्य वराहमिहिर वेधशाला समेत मध्यप्रदेश शासन के विभिन्न विभाग व संस्थाएँ विक्रमोत्सव 2024 की सहयोगी रहेंगी।

विक्रमादित्य पर केन्द्रित विविध आयामों पर विषय विशेषज्ञों से आग्रह कर अलग–अलग विषयों पर पुस्तकें लिखवाने का उपक्रम आरंभ किया गया। महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ ने अल्पावधि में अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया। बौद्धिक समाज के साथ जनसाधारण का सम्राट विक्रमादित्य द्वारा किए गए के कार्यों को जान सकें। इस हेतु महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ लगातार नवाचार का प्रयास कर रही है। साथ ही इस कड़ी में युवाओं को जोड़ने और सम्राट विक्रमादित्य के बारे में अधिकारिक रूप से तथ्यों और अवधारणा को समझने के लिए 'भारत विक्रम व्याख्यानमाला' आरंभ की गयी है। इस कड़ी में पहला आयोजन विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के साथ मिलकर किया गया। आने वाले दिनों में देश के प्रमुख स्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर व्याख्यानमाला को आगे बढ़ाया जाएगा। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर मध्यप्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में विक्रम विचार मंच स्थापित किया जा रहा है। जहाँ निरंतर विमर्श हो सके। शोधपीठ द्वारा निरंतर पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। शोधपीठ का प्रयास है कि समय के साथ वह कदमताल करे और इस दृष्टि के साथ भारत विक्रम यूट्यूब चैनल आरंभ किया गया है। इसके साथ ही शोधपीठ विगत तीन वर्ष से विक्रम संवाद शीर्षक से पाक्षिक आलेख सेवा का प्रकाशन भी कर रहीं हैं। इसके साथ ही शोध पत्रिका विक्रमार्क का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव – 2024 सम्राट विक्रमादित्य का पुण्य स्मरण है।

# प्राचीन देवालय और रंगमंच परंपरा

जगदीश प्रसाद शर्मा

प्राचीन काल में मंदिर या देवालय केवल देव पूजा या अनुष्ठान के ही नहीं कलात्मक तथा अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों के सक्रिय केंद्र होते थे। संगीत, नृत्य व नाट्य के प्रशिक्षण और प्रस्तुतियों की इनमें व्यवस्था रहती थी। मध्यप्रदेश के प्राचीन मंदिरों में उज्जैन के महाकाल मंदिर में तथा ग्वालियर के निकट पद्मावती (आधुनिक पवाया) में नाट्य प्रस्तुतियाँ होने के उल्लेख प्राप्त होते हैं। मेरुतुंगाचार्य ने अपने प्रबंधचिन्तामणि में उज्जयिनी के महाकाल मंदिर के विषय में लिखा है कि सम्राट विक्रमादित्य इस मंदिर में नाट्यप्रयोग देखने के लिए आया करते थे। उज्जयिनी व धार के प्राचीन मंदिरों में यात्रा महोत्सवों में नाटक होते रहते थे। मेरुतुंग ने ही राजा भोज का एक रोचक प्रसंग अपने ग्रंथ में लिखा है। धार के एक शिव मंदिर में किसी संपन्न व्यापारी ने यात्रा महोत्सव कराया। महाराज भोज को इस महोत्सव में नाटक देखने के लिये आमंत्रित किया गया। नाटक की प्रस्तावना में इस सेठ की धन सम्पदा का वर्णन सुन कर भोज चकित रह गये और उनके मन में यहाँ तक विचार आया कि क्यों न वें इस सेठ की संपदा राजसात् कर लें।

भोज ने ही अपनी श्रृंगार मंजरी कथा में मंदिरों में चलने वाली नृत्य, संगीत गायन वादन की गतिविधियों का उल्लेख किया है। प्रदेश के विभिन्न अंचलों में मौर्यकाल और गुप्तकाल के मन्दिरों में प्राप्त मूर्तियों से भी नृत्य व नाट्य की संपन्न गतिविधियों का संकेत मिलता है। विशेष रूप में ग्वालियर के निकट पवाया (प्राचीन पद्मपुरी) में उत्खनन से प्राप्त प्राचीन रंगमंच उल्लेखनीय है। ग्वालियर के निकट का पवाया ग्राम पुराणों में तथा शिलालेखों में बहुचर्चित प्रसिद्ध व प्राचीन पद्मावती नगरी है। संस्कृत के महान् नाटककार भवभूति इसी पद्मावती में रहे। कुछ विद्वानों ने तो पद्मावती या पवाया को भवभूति की जन्मस्थली भी माना है। इनके नाटक इसी पद्मावती के निकट निर्मित कालप्रियनाथ की यात्रा के महोत्सव के अवसर पर खेले गये। इनकी रचना मालतीमाधव में जिन–जिन भौगौलिक स्थलों का वर्णन है, उनकी पहचान पवाया के आस–पास की जा सकती है। इस नाटक के चौथे अंक में पारा और सिंधु इन दो नदियों के संगम का वर्णन है, नवम अंक में लवणा नदी वर्णित है। मधुमती और सिन्धु नदियों के संगम का भी चित्रण भवभूति ने किया है। इस संगम पर स्वर्णबिन्दु नामक स्थान था, जिसमें भगवान् भवानीपति शंकर का मंदिर था। पवाया में प्राप्त उत्खननों से एक प्राचीन शिवलिंग मिला है। सम्भवतः भवभूति के द्वारा वर्णित स्वर्णबिन्दु स्थान यहीं रहा होगा। पारा वर्तमान पार्वती है। लवणा आज की लून नदी है। मधुमती इस समय महुवार कही जाती है। पवाया में प्राप्त रंगमंच 108X108 हाथ के आकार का भरतमुनि के नाट्यशास्त्र

के अनुसार ज्येष्ठ चतुरस्र मंच है। इसी पवाया में सातवीं, आठवीं शताब्दी में भवभूति के नाटक खेले गये।

कालिदास, राजशेखर, भीमट, अनंगहर्ष, कृष्ण मिश्र, बत्तसराज जैसे महान् नाटककार वर्तमान मध्यप्रदेश के प्राचीन जनपदों अवंती, त्रिपुरी, कालंजर आदि में हुए इन्होंने भरत मुनि के नाट्यशास्त्र की परिष्कृत परंपरा को अपना कर उत्कृष्ट रूपकों (नाटक कृतियों की रचना) की इन्हीं नाटककारों ने नाट्य की अन्य परंपराओं का भी उल्लेख किया है। ये परंपराएँ रूपकों के बरबस उपरूपकों की परंपराएँ हैं। भवभूति की तीन नाटक रचनाओं पर इन लोकनाट्य परंपराओं का गहरा प्रभाव है। उन्होंने रामकथा को लेकर दो नाटक लिखे– महावीरचरितम् और उत्तररामचरितम् इन दोनों नाटकों से उस समय की रामलीला की झलक मिलती है। राजशेखर की कर्पूर मंजरी एक सट्टक है। ऊपर हमने सट्टक के दृश्य का भरहुत में अंकन होने का उल्लेख किया है। सट्टक उपरूपक है, जो प्राकृत या लोक भाषा में लिखा जाता है, और गीत, संगीत की प्रचुरता होती है। सटक वास्तव में प्राचीन काल का एक लोकनाट्य ही है। कर्पूर मंजरी में राजशेखर ने पर्चरी का विशद वर्णन किया है। पर्चरी भी उस काल का एक उपरूपक था। इसी तरह के अन्य उपरूपक डॉबी, भाणी या भाणिका, रासक, दण्डरासक आदि मध्य–देश के विविध अंचलों में प्रचलित रहे हैं। नाट्यशास्त्र की परंपरा के परवर्ती आचार्यों ने इनका उपरूपकों के अंतर्गत निरूपण भी किया है। ऊपर राजा भोज के द्वारा हनुमघाटक का पुनरुद्धार कराने की बात कही गई है। हनुमन्नाटक वास्तव में अत्यंत

प्राचीन काल में संस्कृत में रचा गया कथागायन और लीला–शैली का नाटक है। इस नाटक में रामलीला का प्राचीन रूप मिलता है। भोज के द्वारा इस नाटक के पुनरुद्धार कराने के प्रसंग से यही आशय निकलता है कि भोज ने इस नाटक के माध्यम से रामलीला की परंपराओं को भी अपने राज्य में प्रश्रय दिया। राजा भोज स्वयं साहित्य, कला के मर्मज्ञ और रचनाकार थे। उन्होंने अपने समय में लुप्तप्राय हनुमन्नाटक का पुनरुद्धार कराया। उनकी राजसभा में संस्कृत के नाटककार मदन हुए, जिनकी लिखी नाटिका पारिजात मंजरी भोज ने अपने राजमहल में पत्थरों पर टँकवा कर लिखवाया था। अपनी श्रृंगारमंजरी कथा नाम की किताब में भोज ने राजप्रसाद में नाट्य प्रस्तुतियाँ होने का उल्लेख भी किया है।

धार में भोज के सरस्वतीकंठाभरण नामक महल में भी रंगशाला थी। यह महल आज भोजशाला के नाम से जाना जाता है। भोज के आश्रित मदन कवि ने इस महल को शारदासम (सरस्वती का मंदिर) और भारती भवन कहा है। इसी महल में मदन कवि की नाटिका पारिजात मंजरी का भी अभिनय हुआ था। यह अभिनय धारा के राजा अर्जुन वर्मा के समय हुआ। मदन कवि की इस नाटिका को देखने के लिये धारा की जनता उमड़ पड़ी थी। सरस्वतीकण्ठाभरण नाम के महल में कवि गोष्ठियाँ तथा नाटकों के प्रदर्शन होते रहते थे। इसी महल में मदन कवि की नाटिका पत्थरों पर खुदी हुई है। भोज ने सरस्वतीकण्ठाभरण की उपाधि धारण की, इस नाम का राजमहल बनवाया तथा इस नाम से एक काव्यशास्त्र का और व्याकरण का ग्रंथ भी लिखा। सरस्वतीकण्ठाभरण के नाम से उन्होंने एक नाटक भी लिखा था।

मेरुतुंगाचार्य ने अपने कथाग्रंथ प्रबन्धचिन्तामणि में बताया है कि राजा भोज अपनी राजसभा में नाटकों का अभिनय करवाते थे। ये नाटक प्रहसन कटि के विडंबनात्मक रूपक होते थे, जिन्हें 'समस्तराजविडम्बननाटक' कहा गया है। इनमें अन्य राजाओं का हास्यास्पद निरूपण रहता था। जैन ग्रंथ पुरातन प्रबन्ध संग्रह के अनुसार भोज ने अपने समय के सिद्धों (तांत्रिकों) और योगियों पर व्यंग्य करने वाले नाटक भी करवाये थे भोज के पूर्वज सिद्धराज ने भी नाटकों के प्रयोग के लिये अलग से प्रासाद बनवाया था। मध्यकाल में त्रिपुरी (आधुनिक जबलपुर के निकट) सत्ता और संस्कृति का बड़ा केंद्र रहा है। यहाँ के राजा महीपालदेव (912–44 ई.) के आश्रय में संस्कृत के दो महान् नाटककार रहे राजशेखर और शेमीश्वर राजशेखर ने बालभारतम्, प्रचण्डपाण्डव, विद्धशालभञ्जिका कर्पूरमञ्जरी तथा बालरामायण ये चार रूपक लिखे। इनमें से बालभारतम् का अभिनय राजा महीपाल देव की राजसभा में किया गया। क्षेमीश्वर का प्रख्यात नाटक हे चण्डकोशिक। यह राजा हरिश्चंद्र के चरित्र का निरूपण है, हिंदी के सुविदित नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक सत्य हरिश्चंद्र पर इसका गहरा प्रभाव है। दसवीं शताब्दी के आसपास ही कालंजर (वर्तमान बुंदेलखंड) और खजुराहो संस्कृति और कला साधना के केंद्र के रूप में विकसित हुए। कालंजर के राजा भीमट ने संस्कृत में पाँच नाटकों की रचना की थी। ये नाटक अब अप्राप्त हैं। कालंजर के ही दूसरे सम्राट अनंगहर्ष मायूराज हुए जिनके कवित्व की चर्चा संस्कृत के प्राचीन आचार्यों ने बार–बार की है। उदात्त राघव तथा तापसी वत्सराज ये इनके रचे हुए दो नाटक हैं। ग्यारहवीं शताब्दी में संस्कृत के महान् नाटककार कृष्ण मिश्र हुए। इनकी अमर रचना प्रबोध चंद्रोदय नाटक के है, जिसके प्राचीन काल से ही भारत की अनेक भाषाओं में और फारसी में भी अनुवाद हुए हैं। यह एक प्रतीकात्मक नाटक है। यह नाटक चंदेल राजा कीर्तिवर्मा की राजा कर्ण के ऊपर विजय के उपलक्ष्य में खेला गया था। बुंदेलखंड के प्राचीन नाटककारों में वत्सराज का नाम अविस्मरणीय है। वत्सराज कालंजर के राजा परमर्दिदेव (1163–1203 ई.), जिन्हें आल्हा काव्य में परमाल कहा गया है, के मंत्री थे। उन्होंने दुर्लभ विधाओं को लेकर संस्कृत में छह रूपक (नाटक) रचे। इनमें से किरातार्जुनीय व्यायोग का प्रदर्शन परमर्दिदेव के पुत्र त्रैलोक्य मल्ल देव के सामने हुआ। रुक्मिणीहरण ईहामृग कालंजर दुर्ग में चक्रपाणि की यात्रा के उत्सव के समय खेला गया। हास्य चूड़ामणि प्रहसन नीलकंठ की यात्रा के उत्सव के समय प्रदर्शित है। वत्सराज के रूपकों में हास्य चूड़ामणि आधुनिक रंगमंच पर भी बहुत लोकप्रिय हुआ है। इसके मूल संस्कृत में या हिंदी तथा अन्य भाषाओं में इसके अनुवाद को देश के सिद्धहस्त रंगकर्मियों ने मंच पर प्रस्तुत किया है।

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## विक्रमोत्सव - शुभारंभ

विक्रम सम्वत् 2080-81

**01 मार्च 2024 प्रात: 10: 00 बजे से**

**शिवोऽम** - अनहद नाद

शिवादल, भोपाल

स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन

संकल्प न्यास

**वीर भारत**

युगयुगीन भारत के कालजयी महानायकों की
तेजस्विता का संग्रहालय

वीर भारत न्यास, भोपाल, कोठी पैलेस, उज्जैन

लोकार्पण

**विक्रमादित्य वैदिक घड़ी**

भारतीय कालगणना की सर्वाधिक प्रामाणिक
एवं पारम्परिक पद्धति का पुनरस्थापन

सहयोग- नगर पालिक निगम, आचार्य वराहमिहिर वेधशाला, जिला प्रशासन

स्थान -आचार्य वराहमिहिर वेधशाला, जंतर-मंतर

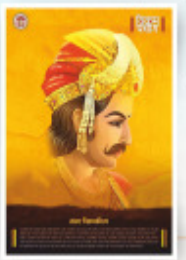

लोकार्पण

**विक्रम पंचांग 2081**

ओम नम: शिवाय (शास्त्रीय नृत्य), निर्देशक - संतोष नायर

हनुमान चालीसा और शिव महादेव (स्तुति) - केजी हूपर ग्रुप, मुंबई

**पं. कन्हैया मित्तल द्वारा भजनामृत प्रस्तुति**

स्थान- पॉलीटेक्निक ग्राउण्ड, उज्जैन | सायं 7: 00 बजे

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

प्रकाशन लोकार्पण

## आर्ष भारत

न्यायनिष्ठ वीर विक्रमादित्य -डॉ. पूरन सहगल
सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य - डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित
श्रीकृष्ण के सृष्ट गुरुवर महर्षि सान्दीपनि - डॉ. प्रभातकुमार भट्टाचार्य
मध्य प्रदेश में स्वाधीनता संग्राम मंडला-डिंडोरी - गिरिजा शंकर अग्रवाल
मध्य प्रदेश में स्वाधीनता संग्राम-दतिया - डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला
मध्य प्रदेश में स्वाधीनता संग्राम-जबलपुर - डॉ. देवेन्द्र देवलिया
मध्य प्रदेश में स्वाधीनता संग्राम-सतना- गोविंद प्रताप सिंह
रामराजा पुस्तक, ओरछा के राजा राम ऑडियो सीडी - पी. नरहरि एवं ऋषिकेश पाण्डेय

स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन

## अनादि पर्व

01 मार्च से 09 अप्रैल 2024 | प्रतिदिन सायं 7:00 बजे
स्थान- त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन
मध्यप्रदेश जनजातीय लोक कला एवं
बोली विकास अकादमी

## कलश यात्रा

स्थान- शा. कन्या महाविद्यालय से शोधपीठ परिसर

संगोष्ठी

## विक्रमादित्य का न्याय

शा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अग्निनी शोध संस्थान
स्थान- शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 06 मार्च 2024

### प्रदर्शनी

**आर्षभारत**

भारतीय ऋषि वैज्ञानिक परम्परा

**विक्रमकालीन मुद्रा एवं मुद्रांक**

सहयोग - अश्विनी शोध संस्थान

**श्रीकृष्ण**

मध्यप्रदेश जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी

स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन

**चौरासी महादेव प्रदर्शनी**

मध्यप्रदेश जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी

स्थान- त्रिवेणी संग्रहालय

**मंदिरों में प्रभु श्रृंगार प्रतियोगिता**

महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति

विक्रमोत्सव
2024
विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र
07 मार्च 2024 से निरंतर
महादेव शिल्प कला कार्यशाला
स्थान-उज्जैन हाट परिसर
07 मार्च 2024 रात्रि 8:00 बजे
शिव-दुर्गा नृत्य नाटिका
प्रख्यात अभिनेत्री - नृत्यांगना हेमा मालिनी एवं
दल की प्रस्तुति
स्थान-पॉलीटेक्निक ग्राउण्ड
08 मार्च 2024 रात्रि 8:00 बजे
नमामि महादेव
शंखनाद
लोकप्रिय पार्श्व गायक
अमित त्रिवेदी एवं दल
स्थानीय संगीतिक प्रस्तुति एवं लेजर शो
स्थान-पॉलीटेक्निक ग्राउण्ड

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 10 मार्च 2024

### लोकरंजन

बोलियों का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

| | | |
|---|---|---|
| बुंदेली/अवधी | - | पद्मश्री अवधकिशोर जड़िया, हरपालपुर |
| राजस्थानी | - | बाबू बंजारा, कोटा |
| भोजपुरी | - | डॉ. धनंजय मिश्र, जम्मू |
| मालवी | - | राजेश रावल सुशील, गोंसा |
| मालवी | - | डॉ. मयंक मंदोरिया, इंदौर |
| निमाड़ी | - | डॉ. शैलेन्द्र चोकड़े, सनावद |
| मालवी | - | ओम बैरागी, उन्हेल |
| मालवी | - | नीरज निखिल, कन्नौद |
| | - | अशोक भाटी, उज्जैन |
| सूत्रधार | - | दिनेश कुमार श्रीवास्तव, उज्जैन |

स्थान- त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन

समय - 7 : 00 बजे

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 11-16 मार्च 2024

**श्रीकृष्णलीलामृत**

मध्यप्रदेश जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी

**श्रीकृष्ण विषयक विमर्श**

दोपहर 02:00 बजे से

**भक्ति गायन: श्रीकृष्ण केन्द्रित**

भरतनाट्यम नृत्य में श्रीकृष्ण

डांडिया रास /गुजरात

श्रीकृष्ण नृत्य-नाट्य प्रस्तुति: उज्जैन

**श्रीकृष्ण: गोटीपुआ नृत्य/उड़ीसा**

ओडिसी नृत्य में श्रीकृष्ण

सत्रिया रास/आसाम

श्रीकृष्ण नृत्य-नाट्य प्रस्तुति: उज्जैन

स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन

समय - सायं 7:00 बजे

## 12 मार्च 2024

- **पुरलिया छाऊ/पश्चिम बंगाल**

कथकली नृत्य में श्रीकृष्ण

रासलीला/उत्तरप्रदेश

श्रीकृष्ण नृत्य-नाट्य प्रस्तुति: उज्जैन

- **भक्ति गायन: श्रीकृष्ण केन्द्रित**

कुचिपुड़ी नृत्य में श्रीकृष्ण

बसंत रास/मणिपुर

छाऊ नृत्य/झारखण्ड

होली-मयूर एवं चरखुला/उत्तरप्रदेश

स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन

समय - सायं 7:00 बजे

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 13 मार्च 2024

**भक्ति गायन: श्रीकृष्ण केन्द्रित**

कथक नृत्य में श्रीकृष्ण

मयूरभंज छाऊ नृत्य/उड़ीसा

महारास/गुजरात

यक्षगान/कर्नाटक

**गोण्ड ठाट्या नृत्य/मध्यप्रदेश**

बरेदी लोक नृत्य/मध्यप्रदेश

श्रीजगन्नाथ प्राकट्य लीला

**स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन**

समय - सायं 7:00 बजे

## 14 मार्च 2024

**बाँसुरी वादन/मध्यप्रदेश**

अहिराई लाठी नृत्य/मध्यप्रदेश

श्रीजगन्नाथ प्राकट्य लीला

**स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन**

समय - सायं 7:00 बजे

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

**16 मार्च 2024 सायं 7:00 बजे**

**पिया सांवरे**

निर्देशक - राजीव सिंह, भोपाल

स्थान- कालिदास अकादमी, उज्जैन

**18-19 मार्च 2024**

**राष्ट्रीय विज्ञान समागम**

सहयोग- म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, उच्च शिक्षा विभाग

स्थान-विक्रमकीर्ति मंदिर/डोंगला/
कालिदास अकादमी, उज्जैन

**01-06 अप्रैल 2024**

**पौराणिक फिल्मों का अंतरराष्ट्रीय महोत्सव**

हिन्दी, भारतीय एवं विश्व भाषाओं- आसियान, दक्षिण अमरीका, अफ्रीकी देशों की पौराणिक फिल्मों का प्रदर्शन

स्थान- त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 02-08 अप्रैल 2024

### विक्रम नाट्य समारोह

स्थान- कालिदास अकादमी परिसर

| | | |
|---|---|---|
| 02 अप्रैल 2024 | कर्ण | - अशोक बांठिया |
| | | - कुलविंदर सिंह, मुम्बई |
| 03 अप्रैल 2024 | अंधा युग | - बालेन्द्र सिंह, भोपाल |
| 04 अप्रैल 2024 | हमारे राम | - आशुतोष राणा, मुम्बई |
| 05 अप्रैल 2024 | अवंती शौर्य | - सतीश दवे, उज्जैन |
| 06 अप्रैल 2024 | कृष्णायन | - संजीव मालीय, उज्जैन |
| 07 अप्रैल 2024 | अवंतीबाई | - संजय गर्ग, जबलपुर |
| 08 अप्रैल 2024 | श्रीकृष्ण | - टीकम जोशी, उज्जैन |

प्रतिदिन- रात्रि 8:00 बजे

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 07-08 अप्रैल 2024

**वेद अंताक्षरी**

विश्व पटल पर अवंतिका विषय पर विमर्श

सहयोग - अनुष्ठान मण्डपम- ज्योतिष अकादमी, उज्जैन

**स्थान-गुमानदेव हनुमान मंदिर, उज्जैन**

## 07 अप्रैल 2024

**दैवज्ञ सम्मान समारोह**

वराहमिहिर सम्मान 2024 एवं ज्योतिष संगोष्ठी

पूर्णश्री फाउण्डेशन, उज्जैन

**स्थान - विक्रम कीर्ति मंदिर, उज्जैन**

## 07-09 अप्रैल 2024

**अंतरराष्ट्रीय इतिहास समागम**

सहयोग -विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नईदिल्ली

**स्थान - विक्रम कीर्ति मंदिर, उज्जैन**

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## 08 अप्रैल 2024

### अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

डॉ. हरिओम पंवार (मेरठ)
डॉ. विष्णु सक्सेना (अलीगढ़)
शम्भू शिखर (नईदिल्ली)
जानी बैरागी (राजोद)
गौरी मिश्रा (नैनीताल)
गजेंद्र प्रियांशु (बाराबंकी)
सतीश सागर (उज्जैन)
सूत्रधार - दिनेश दिग्गज, उज्जैन

स्थान- घण्टा घर चौराहा, उज्जैन
रात्रि 9:00 बजे

## 08-09 अप्रैल 2024

संगोष्ठी- विश्व ज्योतिष उत्सव
पूर्णश्री फाउण्डेशन, उज्जैन
स्थान - विक्रम कीर्ति मंदिर, उज्जैन

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

**09 अप्रैल 2024**

**सूर्योपासना**

सहयोग - नवसम्वत्सर अभिनंदन समारोह समिति

स्थान-क्षिप्रातट, उज्जैन

**महाकाल शिवज्योति अर्पणम्**

25 लाख दीपों का अर्पण

**सृष्टि आरंभ दिवस, पिंगल सम्वत्सर का शुभारंभ**

**उज्जयिनी गौरव दिवस**

सुप्रसिद्ध गायक

जुबिन नौटियाल एवं उनके दल की

सांस्कृतिक प्रस्तुति

**भव्य आतिशबाजी**

स्थान-रामघाट नदी का तट, उज्जैन

रात्रि 8:00 बजे

**विक्रम विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह**

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

स्थान-विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

## अनादि पर्व

**01 मार्च से 09 अप्रैल 2024, प्रतिदिन सायं - 7:00 बजे**

स्थान - कालिदास अकादमी, उज्जैन

| | प्रस्तुति | कलाकार/कलादल |
|---|---|---|
| 01 मार्च 2024 | मलखम्ब प्रस्तुति<br>शिव केन्द्रित भक्ति संगीत | योगेश मालवीय एवं उनका दल, उज्जैन<br>सुचित्रा पंडित एवं उनका दल, उज्जैन |
| 02 मार्च 2024 | शिव केन्द्रित लोकगायन | कबीर मालवीय, उज्जैन |
| 03 मार्च 2024 | मालवी लोकनृत्य | विनती जैन एवं उनका दल, उज्जैन |
| 04 मार्च 2024 | बांसुरी / तबला वादन<br>सांस्कृतिक प्रस्तुति | सुरेन्द्र स्वर्णकार एवं उनका दल, उज्जैन<br>अंकित ग्राम सेवाधाम आश्रम अम्बोडिया के विशेष बच्चों द्वारा |
| 05 मार्च 2024 | पारंपरिक लोकगायन | स्वाती उखले एवं उनका दल, उज्जैन |
| 06 मार्च 2024 | शिव केन्द्रित कथक नृत्य | हीना वासेन एवं उनका दल, उज्जैन |
| 07 मार्च 2024 | भक्ति बैण्ड - शिव केन्द्रित | विशाल सिंह कुशवाह एवं उनका दल, उज्जैन |
| 08 मार्च 2024 | मालवी लोकगायन<br>शिव केन्द्रित कथक नृत्य | राजुल सिंघी एवं उनका दल, उज्जैन<br>प्रशस्ति मानेश्वर, भोपाल |
| 09 मार्च 2024 | शिव केन्द्रित कथक नृत्य | कीर्ति प्रमाणिक एवं उनका दल, उज्जैन |
| 10 मार्च 2024 | शिव विवाह गीत | एकता पोद्दार एवं उनका दल, उज्जैन |
| 11 मार्च 2024 | सितार वादन<br>कथक नृत्य | महेन्द्र बुआ एवं उनका दल, उज्जैन<br>अद्वैता आचार्य, इन्दौर |
| 12 मार्च 2024 | शिव केन्द्रित गायन | डॉ. तृप्ति नागर एवं उनका दल, उज्जैन |
| 13 मार्च 2024 | कथक समूह नृत्य | मयूरी शर्मा एवं उनका दल, उज्जैन |
| 14 मार्च 2024 | उपशास्त्रीय गायन | डॉ. रोहित चावरे एवं उनका दल, उज्जैन |
| 15 मार्च 2024 | वाइलिन वादन | रोहित सोनवाने एवं उनका दल, उज्जैन |
| | कथक नृत्य | डॉ. मेघा शर्मा, उज्जैन |
| 16 मार्च 2024 | मालवी लोकगायन | सुषमा व्यास एवं उनका दल, उज्जैन |
| 17 मार्च 2024 | शिव बारात (माच शैली) | हिरामणी वर्मा एवं उनका दल, उज्जैन |

# विक्रमोत्सव 2024

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नव जागरण और भारत विद्या पर एकाग्र

## अनादि पर्व

**01 मार्च से 09 अप्रैल 2024, प्रतिदिन सायं - 7:00 बजे**

स्थान - कालिदास अकादमी, उज्जैन

| | प्रस्तुति | कलाकार/कलादल |
|---|---|---|
| 18 मार्च 2024 | कथक नृत्य | हरिहरेश्वर पोद्दार, उज्जैन |
| 19 मार्च 2024 | मालवी लोकगीत/लोकनृत्य | महेश कुलश्रेष्ठ एवं उनका दल, उज्जैन |
| 20 मार्च 2024 | तबला वादन | अरुण कुशवाह एवं उनका दल, उज्जैन |
| 21 मार्च 2024 | शिव विवाह/ होली गीत | राजेश कुमार एवं उनका दल, उज्जैन |
| 22 मार्च 2024 | उपशास्त्रीय गायन | माधुरी विश्वकर्मा एवं उनका दल, उज्जैन |
| 23 मार्च 2024 | समूह नृत्य प्रस्तुति | शिवोहम नृत्यकला संस्थान, उज्जैन |
| 24 मार्च 2024 | जुगलबंदी-तबला, सितार, पखावज | अभिषेक व्यास एवं उनका दल, उज्जैन |
| | शिव भजन प्रस्तुति | सरल ज्ञानी, उज्जैन |
| 26 मार्च 2024 | कथक नृत्य प्रस्तुति | माधुरी कोडापे एवं उनका दल, उज्जैन |
| 27 मार्च 2024 | उपशास्त्रीय गायन | डॉ. परमानन्द गंधर्व एवं उनका दल, उज्जैन |
| 28 मार्च 2024 | मालवी लोकगायन | पुरुषोत्तम तंवर एवं उनका दल, उज्जैन |
| 29 मार्च 2024 | नृत्य प्रस्तुति | रेणुका देशपाण्डे एवं उनका दल, उज्जैन |
| 31 मार्च 2024 | संतूर वादन | संस्कृति एवं प्रकृति वहाने, उज्जैन |
| | कथक नृत्य प्रस्तुति | कुलदीप दुबे एवं उनका दल, उज्जैन |
| 1 अप्रैल 2024 | जुगलबंदी (तबला) | अनिल गंधर्व एवं उनका दल, उज्जैन |
| 2 अप्रैल 2024 | शिव भजन | मीना जैन एवं उनका दल, उज्जैन |
| 3 अप्रैल 2024 | कथक नृत्य प्रस्तुति | ईशानी भट्ट एवं सानिका साठे, उज्जैन |
| 4 अप्रैल 2024 | पारंपरिक लोकनृत्य | सोहनी पंवार एवं उनका दल, उज्जैन |
| 5 अप्रैल 2024 | वाईलिन वादन | डॉ. हमिद, उज्जैन |
| 6 अप्रैल 2024 | शिव भजन | सुदर्शन अयाचित एवं उनका दल, उज्जैन |
| 7 अप्रैल 2024 | जुगलबंदी (तबला) | देबव्रत गुप्ता एवं उनका दल, उज्जैन |
| 8 अप्रैल 2024 | कथक नृत्य प्रस्तुति | वैदेही पण्डया एवं उनका दल, उज्जैन |
| 9 अप्रैल 2024 | भक्ति बैण्ड-शिव केन्द्रित भजन | नवतेज सिंह एवं उनका दल, उज्जैन |

**पुस्तक चर्चा**/मिथिलेश यादव

# रघुवंश गाथा रघुकुल की

गाथा एक गणितज्ञ और वैज्ञानिक की ऐतिहासिक उपन्यास "वरः मिहिर" आचार्य वराहमिहिर के जीवन और उनके द्वारा विकसित गणितीय विज्ञान का एक बहुत ही रुचिकर लेखा–जोखा है। ख्यात गणितज्ञ डॉक्टर घनश्याम पांडे ने अपने शोध और कल्पना से आचार्य के जीवन व उनके कार्यों को जो विस्तार दिया है वह एक महत्वपूर्ण लेखकीय प्रयास कहा जा सकता है। आचार्य वरःमिहिर ईसा की पाँचवीं छठी शताब्दी के महान् वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ रहे हैं। कापित्थक (उज्जैन) में उनके द्वारा विकसित गणितीय विज्ञान का गुरुकुल सात सौ वर्षों तक अद्वितीय रहा। वरःमिहिर बचपन से ही अत्यन्त मेधावी और तेजस्वी थे। अपने पिता आदित्यदास से परम्परागत गणित एवं ज्योतिष सीखकर इन क्षेत्रों में व्यापक शोध कार्य किया। उनके कार्यों की एक झलक समय मापक घट यन्त्र, इन्द्रप्रस्थ में लौहस्तम्भ के निर्माण और ईरान के शहंशाह नौशेरवाँ के आमन्त्रण पर जुन्दी–शापुर नामक स्थान पर वेधशाला की स्थापना के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास को बोझिल न बनाने के उद्देश्य से गणितीय गणनाओं का समावेश नहीं है, परन्तु यत्र–तत्र उनकी गणितीय उपलब्धियों की ओर इंगित किया गया है। वरःमिहिर का मुख्य उद्देश्य गणित एवं विज्ञान को जनहित से जोड़ना था। वस्तुतः ऋग्वेद काल से ही भारत की यह परम्परा रही है। वरःमिहिर ने पूर्णतः इसका परिपालन किया है। ईसा की पाँचवीं–छठी शताब्दी के महान भारतीय गणितज्ञ एवं वैज्ञानिक वरः मिहिर के गौरवशाली व्यक्तित्व–कृतित्व को औपन्यासिक शिल्प में प्रस्तुत करती एक महत्वपूर्ण कृति। भारत के प्रसिद्ध विवेक–संपुष्ट और स्वाभिमान–सम्मत अतीत का एक ऐसा आख्यान जो तार्किकता और हार्दिकता का अत्यन्त पठनीय संगम है। उनके द्वारा विकसित गणितीय विज्ञान का गुरुकुल सात सौ वर्षों तक अद्वितीय रहा। उनके जन्म, नाम, जाति और कार्यकाल के सम्बन्ध में बहुत विवाद रहा है। परन्तु कुछ नवीन शोध–पत्रों के आधार पर अब यह विवाद सुलझ गये हैं। विख्यात गणितज्ञ आर्यभट ने स्वयं लिखा है, तदनुसार उनका जन्म सन् 476 ई. में हुआ था और सन् 499 ई. में उन्होंने 'आर्यभटीय' की रचना की थी। आर्यभट की आलोचना करते हुए वरःमिहिर ने पंचसिद्धान्तिका में लिखा

लंकारधरात्र–समये दिनं संकटं जगत् चार्यभतः।
भूयः स एवं सूर्योदयात्प्रभृत्यः लंकायाम्।

अर्थात् आर्यभट का कथन है कि दिन का प्रारम्भ लंका समय के अर्द्धरात्रि से होता है। वरःमिहिर कहते हैं कि

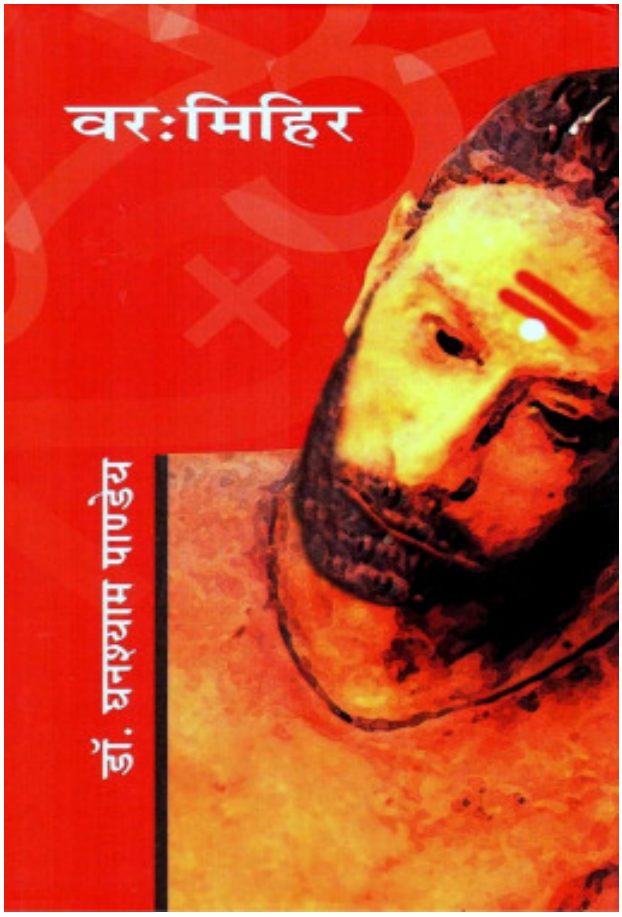


दिन का प्रारम्भ लंका सूर्योदय से होता है। इससे स्पष्ट है कि पंचसिद्धान्तिका आर्यभटीय के बाद की रचना है। वस्तुतः उनका जन्म वर्ष सन् 482 ई, पंचसिद्धान्तिका का रचना काल 505 ई. और दिवंगत होने का वर्ष 587 ई. है। अनेक भारतीय लेखकों का यह कथन कि वह ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में थे और उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों में से एक थे, तथ्यहीन है।

उनका कार्यकाल मगध सम्राट बुध गुप्त, नरसिंह गुप्त बालादित्य, मन्दसौर के राजा यशोधर्मन और द्रव्यवर्द्धन के समय रहा है। पं. सूर्यनारायण व्यास और डॉ. वा.वि. वाकणकर के निरीक्षण में विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा कापित्थक में खुदाई की गयी थी। वहाँ से प्राप्त शिरस्त्राण, कटिबन्ध और पदत्राणयुत सूर्य मूर्ति शक शैली की है और वरःमिहिर इसी मूर्ति के उपासक थे। भारत में सूर्य की पूजा ऋग्वेद काल से की जाती रही है। परन्तु त्रिकाल पूजा हेतु सूर्य सदैव अन्तरिक्ष में विद्यमान रहते

हैं। अतः प्रारम्भ में भारतीय ऋषियों को सूर्य–प्रतिमा निर्मित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। भारतीय और विदेशी प्रायः सभी लेखकों ने वरःमिहिर को ईरानी मूल का कहा है। यह भी त्रुटिपूर्ण है। पारसी जन अग्निपूजक थे, परन्तु प्रतिमापूजक नहीं। अतः वह शक जाति के थे। वह पिता की 55 वर्ष की आयु में भगवान सूर्य के वरदान से पैदा हुए थे। भट्टोत्पल ने तो उन्हें सूर्य का अवतार ही लिखा है। अतः उनका मूल नाम वरःमिहिर था, जो कि बोलचाल की भाषा में 'वराहमिहिर' बन गया था। प्रायः सभी लेखकों ने 'मिहिर' के पूर्व 'वराह' शब्द की उत्पत्ति हेतु अनेक कथाएँ गढ़ ली। बड़ा प्रयास तो जहाँगीर ई. संजन और उनका शब्दशः अनुसरण करते हुए डॉ. अजय मित्र शास्त्री ने किया है। कथन के प्रमाण में उन्होंने दो पारसीक नामों का उल्लेख किया है, 'शहरबराज' और 'मिहिरबराज'। शहरबराज ईरानी शहंशाह परवेज खुसरो के बाद द्वितीय की सेना का एक सेनानायक था।

शहरबराज के नाम का अर्थ सदैव श्रेष्ठ या नायक रहा है, 'शूकर' कभी नहीं। गणित एवं विज्ञान के क्षेत्र में मिहिराचार्य के अनेक मौलिक अवदान रहे हैं। परन्तु उपन्यास को रोचक बनाने के लिए कुछ लोकप्रिय उदाहरण ही प्रस्तुत किये गये। हैं। दिल्ली में महरौली का 'लौहस्तम्भ' उनके कीर्तिस्तम्भ के रूप में आज भी विद्यमान है। देश के सभी शिव मन्दिरों में भगवान शिव की प्रतिमा के ऊपर एक कुम्भ टंगा रहता है। वरःमिहिर ने उन्हें समय–समय पर जलयंत्र के रूप में अभिकल्पित किया था। पंचसिद्धान्तिका में वह लिखते हैं:

यु निशि विनिःसृत–तोया दिष्टच्छिद्रेण षष्ठी भागो यः।

अर्थात् अहोरात्र हेतु जलपूर्ण घट के मूल में बने छिद्र से जब एक साठवाँ भाग जल निकल जाये तो वह एक नाड़ी (24 मिनट) का काल होता है। परन्तु अब पह भगवान शिव के पूजा विधान में सम्मिलित हो गया है। नाड़ी की परिभाषा अथर्ववेद में दी गयी है। वेदांग ज्योतिष में इसके मापन हेतु जल प्रवाह का निर्देश है, परन्तु चिह्नित पर का उल्लेख नहीं है।

आचार्य कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में जलयन्त्र द्वारा सभव मापन की प्रक्रिया का उल्लेख किया है। 'नेवेल' नौकासेतु निर्माण एवं जलयुद्ध के विशेषज्ञ हैं। रणक्षेत्र में उनका कार्य महत्वपूर्ण है। अन्ततः महाक्षत्रप के चारों ओर सम्राट का घेरा कसता जाता है और वह सन्धि हेतु प्रस्तुत होने लगते हैं। अध्याय 7 में ज्योतिषीय गणनाओं और कुछ प्राकृतिक घटनाओं के आधार पर आचार्य मिहिरदत्त (वरःमिहिर के पितामह) दीपावली पर्व के पूर्व वंक्षु नदी को पार करके हूणों के विशाल अभियान की भविष्यवाणी करते हैं। हूणों के रणवाद्य की गूंज से शक राष्ट्रमंडल विषादग्रस्त हो जाता है और भारत सम्राट से सार्थक सन्धि हेतु प्रयत्नशील हो जाता है। अगले दो अध्यायों में बाल्हीक के शक क्षत्रप बोनान के आग्रह पर वंक्षुतट स्थित गुरुकुल के दो आचार्य सन्धिवार्ता हेतु सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य से भेंट हेतु प्रस्थान करते हैं। वह सुवास्तु (स्वात) और कुभा (काबुल) नदियों के संगम पर स्थित पुष्कलावती (चारसद्दा) होते हुए पाणिनि के गाँव शलातुर पहुँचते हैं। अध्याय 9 में शलातुर का संक्षिप्त वर्णन है। उपरोक्त दो आचार्यों में एक, रुद्रभट उज्जयिनी निवासी हैं और दूसरे मिहिरदत्त शक हैं। अध्याय 10 और 11 में सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य इन दोनों आचार्यों से बंधु और सिन्धु के मध्य क्षेत्र की राजनीतिक परिस्थिति और हूणों की आक्रामक शक्ति पर गहन मन्त्रणा करते हैं। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत की सुरक्षा और भारतीय व्यापारियों के लिए रेशम पथ को विवृत रखने हेतु स्वर्गीय सम्राट समुद्रगुप्त और महाक्षत्रप कार्दमक के मध्य की गयी पुरानी सन्धि का पुनः नवीनीकरण किया जाये।

आचार्य रुद्रभट के अनुसार यह सन्धि भारत के हित में है, क्योंकि बाल्हीक, कपिशा और गांधार क्षेत्र की रक्षा हेतु विशाल सेना की आवश्यकता होगी और उसके व्यय हेतु इस क्षेत्र से प्राप्त करों की अपेक्षा सोलह गुना अधिक व्यय करना पड़ेगा। इससे भारत के साधन स्रोतों का व्यर्थ क्षरण होगा। पुरानी सन्धि के अनुसार भारत की संप्रभुता स्थापित रह सकेगी और प्रशासक का कार्य शक महाक्षत्रप का होगा। यह ऐतिहासिक उपन्यास उस कल परिवेश और आचार्य वराहमिहिर के कार्यों को बहुत ही सुंदर ढंग से उल्लेखित करता है।

**महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन के लिए 1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010 से प्रसारित. सम्पादक : श्रीराम तिवारी, समन्वयक : राजेश्वर त्रिवेदी.**

**आलेख सेवा निःशुल्क वितरण के लिए. फोन: 0734-2521499, 0755-2660407** Email:mvspujjain@gmail.com, vikramadityashodhpeeth@gmail.com